प्रत्येक मुसलमान पर

हबीब ﷺ के अनिवार्य हुक़ूक़

लेख

जाज़िअ बिन अब्दुल अज़ीज़ आल तायेअ्

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

सिद्दीक़ अहमद *एवं* जावेद अहमद

www.islamhouse.com

1428-2007

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

प्रत्येक मुसलमान पर हबीब ﷺ के अनिवार्य हुक़ूक़

उम्मते-इस्लामिया के हर व्यक्ति पर नबी ﷺ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्रति दस हुक़ूक़ अनिवार्य हैं जो कि निम्नलिखित हैं:

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना, आप से मुहब्बत करना, आपकी पैरवी करना, आपका अनुसरण करना, आपको अपना आदर्श बनाना, आपका सम्मान करना, आपकी ख़ैरख़ाही करना, आप के अहले-बैत और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुहब्बत करना, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना।

पहलाः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना इस बात को अनिवार्य कर देता है कि अल्लाह तआला, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके ईश्दूतों, आखिरत के दिन और तक़्दीर (भाग्य) पर ईमान रखा जाए। अल्लाह तआला ने इस बात का आदेश (जिसका पालन करना अनिवार्य है) देते हुए फरमायाः

﴿فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا﴾ [التغابن:٨]

“सो तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर जो हमने उतारा है ईमान लाओ।” (सूरतुत-तग़ाबुन्न)

इस अर्थ की आयतें बहुत अधिक हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ऊपर ईमान लाने की अनिवार्यता की सूचना देते हुए फरमायाः

“मुझे इस बात का आदेश दिया गया है कि लोगों से उस समय तक जिहाद करता रहूँ जब तक कि वह इस बात की गवाही न दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा उपासना का पात्र नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के संदेश्वाहक (पैग़म्बर) हैं।” (बुखारी व मुस्लिम)

दूसराः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करनाः

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करना किताब व सुन्नत की दलीलों से अनिवार्य है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللّهُ بِأَمْرِهِ وَاللّهُ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾ [التوبة:٢٤]

"आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुंबे क़बीले और तुम्हारे कमाए हुए माल और वह तिजारत जिसके मंदा पड़ने से तुम डरते हो और वह हवेलियाँ जिन्हें तुम पसंद करते हो, अगर यह सब तुम्हें अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद से भी अधिकतर प्रिय हैं तो तुम प्रतीक्षा करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए, अल्लाह तआला फासिक़ो (पापियों) का मार्ग-दर्शन नहीं करता"। (सूरतुत्-तौबः २४)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहीह हदीस में फरमायाः

> **“तुम में से कोई आदमी उस समय तक पक्का मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह मुझ से अपने (माँ) बाप, बाल-बच्चों और सारे लोगों से अधिकतम मुहब्बत न करने लगे”।** (बुखरी व मुस्लिम)

तीसराः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फरमांबरदारी करनाः

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फरमांबरदारी करना अनिवार्य है, अल्लाह तआला ने इसका आदेश देते हुए फरमायाः

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ﴾ [محمد:٣٣].

> **“ऐ ईमान वालो! अल्लाह की फरमांबरदारी करो और रसूल की फरमांबरदारी करो और अपने आमाल (नेकियों) को नष्ट न करो”।** (सूरत-मुहम्मदः३३)

और फरमायाः

﴿مَّنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ [النساء:٨٠]

“जिस ने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की फरमांबरदारी की उस ने अल्लाह की फरमांबरदारी की”। (सूरतुन-निसाः८०)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत व फरमांबरदारी की पहचान यह है कि आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को ठोस पकड़ ले और आपके बताए हुए तरीक़े से रहनुमाई हासिल करे। इसी तरह अच्छा वेश भूषा (वज़ा क़ता) अपनाना, आवाज धीमी रखना, शरीर और कपड़ा साफ-सुथरा रखना, बात-चीत और काम-काज में सच्चाई का दामन न छोड़ना, खाना-पानी, शादी-विवाह में हलाल का ध्यान रखना, ग़रीबों और मिस्कीनों से प्यार करना और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना।

चौथाः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करनाः

अक़ीदह और क़ौल व अमल में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण करना अनिवार्य है और यही सम्पूर्ण दीन है, और इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विरोध करना पूरे दीन से निकल जाना है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ﴾ [الأعراف: ١٥٨].

"और आपकी बात मानो ताकि तुम (सीधे) मार्ग पर आ जाओ।" (सूरतुल-आराफ़ः१५८)

और फरमायाः

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ﴾ [آل عمران:٣١]

"कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो, खुद अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा।" (सूरत-आल इम्रानः३१)

ताबेदारी का यह मतलब है कि मुसलमान कोई बिद्अत न निकाले, और न ही किसी की निकाली हुई बिद्अत को करे, चाहे वह बिद्अत निकालने वाला कितना ही बड़ा क्यों न हो। और उसके लिए आवश्यक है कि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के बाद खुलफाये-राशिदीन ﷺ (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के तरीक़े पर चले, इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान हैः

"तुम मेरी और मेरे बाद हिदायत के मार्ग पर चलने वाले खुलफ़ाये-राशिदीन की सुन्नत को ठोस पकड़ लो, और उसे दाँतों से जकड़ लो, और (दीन में) नई निकाली

हुई चीज़ों से दूर रहो, क्योंकि (दीन में) हर नई निकाली हुई चीज़ बिद्अत है और हर बिद्अत गुमराही है"।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी में यह भी आता है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात के सामने हर बात को रद्द कर दिया जाए और आपकी शरीअत के मुक़ाबले में हर शरीअत को त्याग दिया जाए, और अक़ीदह और क़ौल व अमल में आपके तरीक़े के मुखालिफ हर चीज़ से मुंह मोड़ लिया जाए।

पांचवाँ : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना आदर्श माननाः

अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने से पहले के नबियों और रसूलों के आदर्श को अपनाने का आदेश दिया है, अल्लात तआला ने फरमायाः

﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾ [الأنعام:٩٠]

"यही लोग ऐसे थे जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत (मार्ग-दर्शन) प्रदान किया था, सो आप भी उन ही के आदर्श पर चलिए।" (सूरतुल-अनआम:९०)

और अल्लाह तआला ने हम मुसलमानों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर्श (उसवा-ए-हसनह)

को अपनाने का हुक्म दिया है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ﴾ [الأحزاب:٢١]

"निःसन्देह तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में उत्तम आदर्श (बेहतरीन नमूना) है।" (अल-अहज़ाबः२१)

यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतरीन आदर्श, नमूना और आइडियल हैं, इसलिए तुम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर्श और नमूना के अनुसार बनो।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फरमांबरदारी करने और आपके आदर्श को अपनाने पर हमारी हिदायत को लंबित (मौकूफ़) किया है। अल्लाह सुब्हानहु ने फरमायाः

﴿قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِن تَوَلَّوا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ﴾ [النور:٥٤]

"कह दीजिए कि अल्लाह तआला का हुक्म मानो, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करो, फिर भी अगर तुम ने मुंह फेरा तो पैग़म्बर के ऊपर तो केवल वही है जिसकी उनपर ज़िम्मेदारी

डाली गयी है, और तुम्हारे ऊपर उसकी जवाबदेही है जिसकी ज़िम्मेदारी तुम्हें सौंपी गई है। और हिदायत तो तुम्हें उसी समय मिलेगी जब तुम पैग़म्बर की फरमांबरदारी करोगे।" (सूरतुन-नूरः५४)

इस से यह लाज़िम आता है कि आपकी पैरवी को छोड़ देना आदमी को गुमराही में ढकेल देता है जो दोनों ज़िन्दगियों में उसके लिए तबाही (सर्वनाश) का कारण है।

छठाः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर व सम्मान करनाः

अल्लाह तआला ने अपने इस फरमान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर व सम्मान (इ़ज़्ज़त व एहतराम) करने का आदेश दिया हैः

﴿إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِداً وَمُبَشِّراً وَنَذِيراً لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلاً﴾ [الفتح:٨- ٩]

"निःसन्देह हम ने आप को गवाही देने वाला, और शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि (ऐ मुसलमानों!) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और उसकी मदद करो और उसका सम्मान करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करो।" (सूरतुल-फत्हः८-९)

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर व सम्मान करते थे, इसकी झलक देखनी है तो अम्र बिन आस की यह हदीस मुलाहज़ा कीजिएः वह कहते हैंः मेरे निकट अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिकतर महबूब (प्रिय) और मेरी निगाह में आप से अधिकतर महान कोई नहीं था, मैं आपकी अज़मत (महानता) के कारण आपको आँख भर कर देखने की शक्ति नहीं रखता था, अगर मुझसे आपके गुण-विशेषण की व्याखया करने के लिए कहा जाए तो नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी आँख भर कर नहीं देख पाता था।

उसामा बिन शरीक बयान करते हैं कि मैं अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आपके सहाबा आपके गिर्द इस तरह बैठे हुए थे मानो उनके सरों पर चिड़ियाँ बैठी हैं।

सातवाँः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम (प्रतिष्ठा) करनाः

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा और ताज़ीम से मुराद (अभिप्राय) यह है कि हर उस चीज़ का सम्मान करना और उसे महान समझना जिस का आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंध है, जैसे आप का नाम, आपकी हदीस, आपकी सुन्नत, आपकी शरीअत, आपके घराने वाले, आपके सहाबा, आपके उम्मती, आपकी मस्जिद और हर वह चीज़ जिसका दूर य क़रीब का आप से संबंध है, यह सब के सब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर व सम्मान, मुहब्बत और ताज़ीम के अन्तरगत आते हैं, जिस तरह कि यह अल्लाह की हुर्मतों के अन्तरगत भी आता है, और अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ﴾ [الحج:٣٠]

''और जो कोई अल्लाह की हुर्मतों की ताज़ीम करेगा तो यह (अमल) उसके लिए उसके रब के पास अधिक बेहतर है।'' (सूरतुल-हज्जः३०)

आठवाँः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खैरखाही करना अनिवार्य है

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ैरख़ाही के अनिवार्य होने के किताब व सुन्नत से अनेक प्रमाण हैं, उदाहरण के लिए अल्लाह सुब्हानहु व तआला का यह फरमान हैः

﴿ وَلاَ عَلَى الَّذِينَ لاَ يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُواْ لِلّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ [التوبة:٩١]

“और उन पर जिन के पास खर्च करने को कुछ भी नहीं कोई हरज (गुनाह) नहीं अगर वह अल्लाह और उसके रसूल की ख़ैरख़ाही करते रहें।”

(सूरतुत-तौबहः९१)

इस आयत में अल्लाह तआला ने पैग़म्बर की ख़ैरख़ाही का उल्लेख किया है कि वह आदमी के लिए लाभदायक है और हरज (गुनाह) को उठा देने वाला है जब तक कि अल्लाह और उसके रसूल की ख़ैरख़ाही करने वाला है, उनके साथ धोखा और फरेब करने वाला नहीं है।

इसी प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान हैः **“दीन ख़ैरख़ाही का नाम है, दीन ख़ैरख़ाही का नाम है, दीन ख़ैरख़ाही का नाम है”** हम ने कहाः किसके लिए ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने फरमायाः **“अल्लाह के लिए, उसकी किताब के लिए, उसके रसूल के लिए, मुसलमानों के इमामों (शासकों) के लिए और उनके साधारण जन के लिए”**। (मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए ख़ैरख़ाही को दीन बताया है।

नवाँः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले-बैत और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम *से मुहब्बत करना*

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले-बैत और आप के सहाबा से मुहब्बत करना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में शामिल है, और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत वाजिब है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस चीज़ से मुहब्बत करते हैं उस से मुहब्बत करना भी वाजिब है, इस आधार पर जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले-बैत और आप के सहाबा से मुहब्बत नहीं की तो दर्असल उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी मुहब्बत नहीं की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमायाः

“उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है किसी आदमी के दिल में ईमान उस समय तक नहीं प्रवेश कर सकता जब तक कि वह तुम से अल्लाह और उसके रसूल के लिए मुहब्बत न करे, और जिस ने मेरे चचा को तकलीफ पहुँचाई उसने मुझे तकलीफ पहुँचाई, निःसन्देह आदमी का चचा उसके बाप के समान होता है।”

दसवाँः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजनाः

यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हर मोमिन मर्द व औरत पर वाजिब दस हुकूक़ में अन्तिम हक़ है, यह हक़ किताब व सुन्नत और इजमा-ए-उम्मत से वाजिब है, अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً ﴾ [الأحزاب:٥٦]

"बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम (भी) उन पर दरूद व सलाम भेजो।" (सूरतुल-अहज़ाब:५६)

और आपसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"उस आदमी की नाक खाक आलूद हो जिसके पास मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दरूद न भेजे"। (इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया है और हसन हदीस कहा है)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा किः हम आप पर सलाम पढ़ना तो जानते हैं, आप पर दरूद कैसे भेजें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः कहोः

((اللهم صل على محمد وعلى آل محمد، كما صليت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم، إنك حميد مجيد، اللهم بارك على محمد وعلى آل محمد، كما باركت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم، إنك حميد مجيد))

‘‘ऐ अल्लाह! रहमत भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आले मुहम्मद पर जिस प्रकार तू ने रहमत भेजा है इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और आले इब्राहीम पर, बेशक तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह तू बरकत नाज़िल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आले मुहम्मद पर जिस तरह कि तू ने बरकत नाज़िल फरमाया है इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और आले इब्राहीम पर, बेशक तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है।’’ (बुखारी व मुस्लिम)

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

atazia75@g mail.com

(शैख अबू बक्र जज़ायरी कि किताब ‘हाज़ल हबीबो या मुहिब्ब’ से सारांशित)